# श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

## ॥ श्री गीत गोविंद॥

मेरे बांके बिहारी लाल, तू इतना ना करियो श्रृंगार,
नजर तोहे लग जाएगी ।

तेरी सुरतिया पे मन मोरा अटका ।
प्यारा लागे तेरा पीला पटका ।
तेरी टेढ़ी मेढ़ी चाल, तू इतना ना करिओ श्रृंगार,
नजर तोहे लग जाएगी ॥
मेरे बांके बिहारी लाल...॥

तेरी मुरलिया पे मन मेरा अटका ।
प्यारा लागे तेरा नीला पटका ।
तेरे घुंघर वाले बाल, तू इतना ना करियो श्रृंगार,
नजर तोहे लग जाएगी ॥
मेरे बांके बिहारी लाल...॥

तेरी कमरिया पे मन मोरा अटका ।

प्यारा लागे तेरा काला पटका ।

तेरे गल वैजंती माल, तू इतना ना करियो श्रृंगार,

नजर तोहे लग जाएगी ॥

मेरे बांके बिहारी लाल, तू इतना ना करियो श्रृंगार,

नजर तोहे लग जाएगी

## ॥ गीतम् 24 ॥

(अथ चतुर्वि(म्)शतितमः(फ्) प्रबन्धो रामकरीरागेण रूपकताले गीयते)

कुरु यदुनन्दन चन्दनशिशिरतरेण करेण पयोधरे ।

मृगमदपत्रकमत्र मनोभवमङ्गलकलशसहोदरे ।

निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने ॥ 1॥

अलिकुलगञ्जनमञ्जनकं(म्) रतिनायकसायकमोचने ।

त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जलमुज्ज्वलय प्रिय लोचने ॥ 2॥ निजगाद

नयनकुरङ्गतरङ्गविलासनिरोधकरे श्रुतिमण्डले ।

मनसिजपाशविलासधरे शुभवेश निवेशय कुण्डले ॥ 3॥ निजगाद

भ्रमरचयं(म्) रचयन्तमुपरि रुचिरं(म्) सुचिरं(म्) मम सम्मुखे ।

जितकमले विमले परिकर्मय नर्मजनकमलकं(म्) मुखे ॥ 4॥ निजगाद

मृगमदरसवलितं(लँ) ललितं(ङ्) कुरु तिलकमलिकरजनीकरे ।

विहितकलङ्ककलं(ङ्) कमलानन विश्रमितश्रमशीकरे ॥ 5॥ निजगाद

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मनसिजध्वजचामरे ।
रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखण्डिशिखण्डकडामरे ॥ 6॥ निजगाद

सरसघने जघने मम शम्बरदारणवारणकन्दरे ।
मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय वासय सुन्दरे ॥ 7॥ निजगाद

श्रीजयदेववचसि शुभदे सदयं(म्) हृदयं(ङ्) कुरु मण्डने ।
हरिचरणस्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्वरखण्डने ॥ 8॥ निजगाद